

जगतगुरु सनातन सम्राट स्वामी चक्रपाणि जी महाराज
(श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा)
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारत हिंदू महासभा / संत महासभा

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' पुस्तक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष और आत्मिक संतोष की अनुभूति हो रही है। यह पुस्तक केवल शब्दों का संकलन नहीं, अपितु मानवता, सेवा, करुणा, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के उन मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है, जिनके आधार पर एक सशक्त, संवेदनशील एवं सभ्य समाज का निर्माण होता है।

डॉ. देवेंद्र कुमार पाठक जी एक कर्मनिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं समाजसेवा के प्रति समर्पित व्यक्तित्व हैं। वे प्रतिभा के धनी, चिंतनशील लेखक तथा सनातन संस्कृति के सच्चे साधक हैं। समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता, मानव कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा धर्म और राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण उन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

पंडित देवेंद्र पाठक जी का मेरे प्रति स्नेह, श्रद्धा एवं आत्मीयता सर्वविदित है। वे मेरे अत्यंत विश्वसनीय, प्रिय एवं समर्पित शिष्यों में से एक हैं। सनातन धर्म के ध्वजवाहक के रूप में वे जिस प्रकार निरंतर समाज जागरण, संस्कृति संरक्षण तथा मानव सेवा के कार्यों में संलग्न हैं, वह निःसंदेह अनुकरणीय है। वस्तुतः वे केवल मानवता के हितैषी ही नहीं, बल्कि उसके वास्तविक 'प्रहरी' हैं।

जब उन्होंने इस पुस्तक के नामकरण हेतु मुझसे निवेदन किया, तब उनके व्यक्तित्व, कार्यों एवं जीवन-दृष्टि को ध्यान में रखते हुए मैंने इस पुस्तक का नाम 'मानवता के प्रहरी' रखने का सुझाव दिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह नाम पुस्तक की आत्मा, उसके उद्देश्य तथा लेखक के जीवन-कार्य को सार्थक रूप से अभिव्यक्त करता है।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों को मानवता, सेवा, सदाचार, कर्तव्यबोध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागृत करेगी तथा उन्हें राष्ट्र एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए प्रेरित करेगी।

मैं अपने अति प्रिय शिष्य डॉ. देवेंद्र कुमार पाठक जी को इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। प्रभु श्रीराम, भगवान शिव एवं माँ भगवती की कृपा से आपका जीवन यश, कीर्ति, सेवा और साधना के नवीन आयाम स्थापित करे। आप निरंतर मानवता, राष्ट्र और सनातन धर्म की सेवा में अग्रसर रहें तथा अपने सत्कर्मों से समाज को नई दिशा प्रदान करते रहें।

'जो स्वयं दीप बनकर जलते हैं, वही जग को प्रकाश देते हैं;
मानवता की राह पर चलने वाले ही इतिहास रचते हैं।'

स्नेह, आशीर्वाद एवं मंगलकामनाओं सहित,



Gen.Sir Prof Dr.Jasbir Singh
Member-Presidential Advisory Board
Official Representative- United Nations
President-International Police Forum IGO.
President University-IOUHHSP, GEU.
United States of America

Message of Congratulations

PAB/107/USA

My experiences of travelling across diverse nations and working with people from different societies have taught me that the true identity of humanity is defined not by nationality, language, culture, or religion, but by our compassion and respect for one another. Whenever an organization embraces this fundamental principle and dedicates itself to bringing positive change to society, its contribution transcends local boundaries and acquires global significance.

With this spirit, I extend my heartfelt congratulations on the publication of the inspiring volume "Guardians of Humanity" by the International Human Rights Protection Bureau (India). This book is far more than a collection of distinguished personalities; it is a powerful record of the timeless values of service, justice, equality, compassion, responsibility, and human dignity. It reminds us that these ideals must remain the highest priorities in every civilized society.

The present era reminds us that lasting peace cannot be achieved merely through agreements; it is established through the creation of a just and inclusive society. Respect for human rights is not only a legal obligation but also a moral responsibility shared by every citizen and every institution. I am pleased to note that the International Human Rights Protection Bureau (India) has consistently advanced these noble ideals through public awareness, social engagement, and constructive initiatives over the years. Such efforts serve as a source of inspiration for the global community.

I believe that "Guardians of Humanity" will become a lasting source of inspiration for future generations. By presenting the life journeys of remarkable individuals who have devoted themselves to the service of humanity, this publication demonstrates that true leadership is measured not by personal achievement, but by an unwavering commitment to the welfare of society and the dignity of every human being. I am confident that this book will inspire young people, social workers, educators, policymakers, and future leaders to embrace a more humane and people-centered approach in their respective fields.

I convey my sincere appreciation and warm congratulations to the leadership, office-bearers, associates, and all contributors of the International Human Rights Protection Bureau (India) for this historic publication. I sincerely hope that the organization will continue to reach new heights in promoting service, justice, peace, the protection of human rights, and global harmony, while serving as a strong voice for human values across the world.

The protection of humanity is not merely an objective; it is our shared moral commitment to the entire human family. With this conviction, I extend my heartfelt best wishes for the outstanding success of this publication and the grand event associated with it.

Gen.Sir Prof Dr.Jasbir Singh

STATE OF BIRLAND (Bir Tawil)

The Government of the Birland State



Date: July 25, 2026
Doc. No. BIRPM/IHRP012026

The Capital Bartazuga 01
1000 Bir Tawil Land
AFRICA
www.birland.net

MESSAGE

It is with profound respect and sincere pleasure that I extend my warmest congratulations to the International Human Rights Protection Bureau (India) on its recent milestones and on the forthcoming launch of the landmark publication Manavta Ke Prahari (Guardians of Humanity).

I am deeply honoured to join the distinguished gathering being organized at the NDMC Convention Centre, New Delhi, on 4 August 2026, to mark this significant occasion.

As Co-Founder and President of the Government of The State of Birland — an emerging humanitarian nation situated in Bir Tawil, Africa — I wish to affirm that our endeavours are fully aligned with the noble objectives of the International Human Rights Protection Bureau of India. The State of Birland is being established with the sole purpose of restoring dignity, protection, and a sense of belonging to stateless persons and refugees.

Our unwavering commitment remains the advancement and safeguarding of human rights, which we regard as inseparable from the protection of human life itself. The fundamental purpose of human rights is to uphold the inherent dignity, liberty, and security of every individual.

I look forward with great anticipation to participating in this meaningful celebration of humanity and justice, and to the continued collaboration in the shared cause of human rights.

With highest regards,

HRM Prof. Dr. Queen Eden Soriano Trinidad, GCBS, JP
The Prime Minister of State of
stateofbirland@gmail.com +639176221977

International Offices:

Birland-USA Office	1503 Main St #375 Grandview, Missouri 64030, USA
Birland-Nepal Office	553/16 Dhumbarahi Marg. Kathmamandu Nepal, P.O. Box 881
Birland-Russia Office 1	Kuznetsk Brudge 19 Building 1, Entrance 5 Moscow Russia
Birland-Russia Office 2	25, Tipanjiva, St.Bldg., 2, Kremlin Stars Tower, First Floor, Saint Petersburg, Russia



श्री श्री श्री 1008 जगतगुरु लामा घ्याछो रिन्पोछे
Founder/World President - बुद्धिष्ट वर्ल्ड पिस फाउण्डेशन
अंतर्राष्ट्रीय सप्तऋषि अखाड़ा - काठमांडू, नेपाल
प्रमुख **संरक्षक/सलाहकार -** अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)

शुभकामना संदेश

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा प्रकाशित होने जा रहे 'मानवता के प्रहरी' ग्रंथ के 30 अगस्त, 2026 को नई दिल्ली में आयोजित भव्य लोकार्पण समारोह के पावन अवसर पर मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

'मानवता के प्रहरी' केवल एक ग्रंथ नहीं, अपितु मानवता, करुणा, शांति, न्याय, सद्भाव तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का एक उत्कृष्ट वैचारिक दस्तावेज है। यह कृति मानवाधिकारों के संरक्षण, सामाजिक समरसता, विश्वबंधुत्व तथा लोकमंगल की भावना को सुदृढ़ करने वाली एक युगानुकूल एवं प्रेरणादायी पहल है। वर्तमान समय में, जब विश्व अनेक नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, ऐसे समय में इस प्रकार की लोकहितकारी कृति का प्रकाशन निस्संदेह अत्यंत प्रशंसनीय, अभिनंदनीय तथा युगोपयोगी है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकारों की रक्षा, मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा, सामाजिक न्याय की स्थापना, सेवा, करुणा तथा राष्ट्रीय एकात्मता के संवर्धन हेतु किया जा रहा सतत एवं समर्पित प्रयास न केवल सराहनीय है, अपितु समस्त समाज के लिए प्रेरणास्पद भी है। 'मानवता के प्रहरी' उसी महान संकल्प, लोकमंगलकारी दृष्टि एवं मानवीय उत्तरदायित्व का सजीव स्वरूप है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ जनमानस में नैतिक चेतना, कर्तव्यपरायणता, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता तथा मानव सेवा के आदर्शों को और अधिक सुदृढ़ करेगा तथा समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा।

भारत राष्ट्र की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित इस ग्रंथ का लोकार्पण समारोह निश्चय ही एक ऐतिहासिक, गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायी अवसर सिद्ध होगा। यह ग्रंथ विद्वानों, शिक्षाविदों, न्यायविदों, समाजसेवियों, प्रशासनिक अधिकारियों, शोधकर्ताओं तथा जनसामान्य के लिए समान रूप से उपयोगी एवं प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा तथा समाज में शांति, सह-अस्तित्व, करुणा, सद्भाव, सहिष्णुता और मानवीय सनातन बौद्धमूल्यों के संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस महनीय एवं लोककल्याणकारी प्रकाशन के लिए मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, संपादकीय मंडल , सुभचीतंक तथा इस ग्रंथ के सृजन में सहभागी सभी विद्वानों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ। तथागत भगवान बुद्ध सनातन की असीम कृपा से 'मानवता के प्रहरी' मानवता के कल्याण, विश्वशांति, सामाजिक समरसता तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन का एक अमर पथप्रदर्शक ग्रंथ सिद्ध हो तथा युगों-युगों तक समस्त मानव समाज को सत्य, करुणा, सेवा और धर्मनिष्ठ जीवन की प्रेरणा प्रदान करता रहे। इसी मंगलकामना के साथ पुनः हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ।

DULI YANG MAHA MULIA
SRIPADUKA BAGINDA BERDAULAT AGUNG
MAHARAJA SRINALA PRADITHA ALPIANSYAH SRICHZA FACHLEVIE WANGSAWARMAN
MAHARAJA KUTAI MULAWARMAN



KMK /1026/IND

Message of Congratulations

The true strength of human civilization lies not in its material achievements, but in the universal values that uphold human dignity, justice, compassion, peace, tolerance, equality, and mutual respect. These enduring principles have brought diverse civilizations, cultures, and nations closer together, fostering a shared sense of responsibility, cooperation, and commitment to the common good of humanity.

At a time when the world is facing numerous social, humanitarian, environmental, and global challenges, the publication of "Guardians of Humanity" is a highly inspiring and visionary initiative. This remarkable work is not merely a book introducing distinguished personalities; rather, it is a testament to the noble ideals of humanitarian service, social justice, ethical leadership, international cooperation, and the protection of human rights.

The efforts of the International Human Rights Protection Bureau (India) in publishing this significant work and recognizing distinguished individuals who have devoted themselves to the service of humanity across different countries, cultures, and communities are truly commendable. This initiative further reinforces the belief that respect for human rights, the protection of human dignity, and the promotion of world peace are shared responsibilities of the entire global community.

I am confident that "Guardians of Humanity" will transcend national boundaries, languages, and cultural differences to inspire people around the world to embrace the ideals of humanity, compassion, selfless service, ethical responsibility, and peaceful coexistence. This publication will also serve as a fitting tribute to the countless individuals whose unwavering dedication and selfless efforts have contributed to the welfare of humanity and the protection of human rights.

I extend my heartfelt congratulations and best wishes to all the distinguished scholars, authors, humanitarian leaders, social reformers, organizers, and readers associated with this historic publication. It is my sincere hope that this outstanding work will play a significant role in strengthening global peace, harmony, international friendship, cultural understanding, the protection of human rights, and the spirit of universal brotherhood.

May "Guardians of Humanity" serve as a beacon of inspiration, service, ethical leadership, and global responsibility for generations to come, while continuously spreading the universal message of humanity, justice, compassion, and lasting peace throughout the world.

Service to humanity is the foundation of world peace, and the protection of human rights remains the highest hallmark of a just, inclusive, and prosperous global society.

With my heartfelt congratulations and best wishes.

Maharaja

HIS MAJESTY GREAT KING
PROF. DR. (H.C.) M.S.P.A. IANSYAH RECHZA. FW. PHD.



Message of Greetings

Martial Arts Association – International (MAA-I)

On behalf of the **Martial Arts Association – International (MAA-I) Germany**, it is my great honor to extend our sincere congratulations to the **International Human Rights Protection Bureau (India)** on the publication of the prestigious volume **"Guardians of Humanity."**

The values that unite humanity—respect, integrity, compassion, justice, responsibility, and service—are the very same values that have guided the philosophy of traditional martial arts for centuries. True martial arts are not defined by physical strength alone, but by character, discipline, self-control, and the willingness to protect others.

As an international martial arts organization, MAA-I is committed not only to the promotion of excellence in martial arts but also to education, youth development, intercultural understanding, peace-building, and violence prevention. Across nations and cultures, we believe that martial arts can serve as a bridge between people, fostering mutual respect and creating stronger, safer communities.

The publication of **"Guardians of Humanity"** is a meaningful tribute to individuals whose dedication to humanity demonstrates that genuine leadership is measured through service to others. By recognizing those who work tirelessly for peace, human dignity, education, and social progress, this publication sends a powerful message that compassion and responsibility remain the foundation of a civilized world.

The Martial Arts Association – International expresses its deepest appreciation to the organizers, editors, and contributors for this remarkable initiative. We sincerely hope that this publication will inspire future generations to become responsible citizens, ethical leaders, and ambassadors of peace.

May the spirit of humanity continue to unite nations beyond borders, cultures, and beliefs, reminding us that our greatest strength lies in our shared commitment to protecting human dignity and building a more peaceful world.

On behalf of the Martial Arts Association – International (Germany), I wish the **International Human Rights Protection Bureau (India)** every success for this outstanding publication and for its continued efforts in promoting human rights, justice, peace, and international cooperation.

With highest respect,

Bernd Höhle-Kleinertz
President – Martial Arts Association – International (Germany)
Germany



Amb. Col. Kuwar Amritbir Singh
Kentucky Colonel, IPF Honourable Colonel,
Fitness Icon, Pushup Man of Punjab, India

Message of Congratulations

To,

The Leadership, Office-Bearers, & Organizers

International Human Rights Protection Bureau (India)

I am delighted to learn that the International Human Rights Protection Bureau (India) is organizing a special function at the NDMC Convention Centre, New Delhi, on August 30, 2026, to mark the launch of the landmark book titled "Manavta Ke Prahari" (Guardians of Humanity).

Every progressive society is built on the foundation of compassion, equality, and an unwavering commitment to the service of others. In today's fast-evolving world, true leadership and societal growth are not merely reflected in individual achievements, but in how dedicatedly we work toward the upliftment of the underprivileged, the protection of fundamental human dignity, and the empowerment of our youth.

The publication of "Manavta Ke Prahari" is a highly commendable effort to document, honor, and celebrate the selfless journeys of extraordinary individuals who have dedicated their lives to human welfare, social justice, and nation-building. By capturing these inspiring life stories, this volume will serve as a beacon of light and a continuous source of motivation for the younger generation, encouraging them to step forward with purpose, discipline, and empathy.

I extend my heartfelt congratulations and warmest best wishes to the entire team of the International Human Rights Protection Bureau (India) for compiling this historic and meaningful publication. I am confident that the upcoming event will be a grand success and that your constructive initiatives will continue to inspire citizens across the nation to actively contribute toward a more just, inclusive, and compassionate society. With sincere regards and best wishes,Amb. Col.

Kuwar Amritbir SinghKentucky Colonel, IPF Honourable Colonel, Fitness Icon, Pushup Man of Punjab, India

Prof. Ashim Kumar Ghosh
Governor, Haryana

सत्यमेव जयते

प्रो० असीम कुमार घोष
राज्यपाल, हरियाणा



HLB/PRO-MSG/2026-87
Dated- 23.07.2026

MESSAGE

I am pleased to learn that the International Human Rights Protection Bureau (India) is organizing a special function to launch the book titled *Manavta Ke Prahari* at the NDMC Convention Centre, New Delhi, on August 30, 2026. I extend my heartfelt greetings and best wishes to the organizers, contributors and all those associated with this meaningful initiative.

The publication of *Manavta Ke Prahari* is a commendable effort to document and highlight the inspiring work being undertaken for the welfare of humanity, particularly for the upliftment of marginalized, underprivileged and vulnerable sections of society.

The protection and promotion of human rights require the collective commitment of governments, institutions, civil society organizations and every responsible citizen. It is through sustained efforts, social awareness and active public participation that we can create an environment where every individual enjoys equal opportunities, respect and protection, irrespective of caste, creed, gender, religion or economic status.

I am confident that this book will inspire readers to appreciate the invaluable contributions of individuals and organizations working selflessly to uphold human rights and serve society. It will also encourage greater sensitivity towards the concerns of disadvantaged communities and motivate more people to participate in humanitarian and social welfare initiatives.

Best wishes!

(Prof Ashim Kumar Ghosh)

रमेन डेका
Ramen Deka



सत्यमेव जयते

राज्यपाल, छत्तीसगढ़
Governor, Chhattisgarh

लोक भवन, रायपुर
Lok Bhavan, Raipur

क्र./1190/पीआरओ/लोस/2026
रायपुर, दिनांक 16 जून 2026

–: संदेश :–

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा प्रकाशित पुस्तक **"मानवता के प्रहरी"** का विमोचन किया जा रहा है।

यह पुस्तक मानवता, सामाजिक सेवा, मानवाधिकार संरक्षण तथा वंचित और कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रेरणादायी योगदान को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सराहनीय प्रयास है।

मानवाधिकारों का संरक्षण, सामाजिक समरसता का संवर्धन तथा सेवा और करुणा की भावना किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला हैं। ऐसे कार्य न केवल सामाजिक चेतना को सशक्त बनाते हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को भी राष्ट्र निर्माण और जनकल्याण के लिए प्रेरित करते हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक समाज में संवेदनशीलता, सेवा, समानता और मानव गरिमा के मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

"मानवता के प्रहरी" पुस्तक के सफल प्रकाशन एवं विमोचन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

रमेन डेका

(रमेन डेका)

डॉ. हरि बाबू कंभमपाटि
Dr. Hari Babu Kambhampati



लोक भवन
भुवनेश्वर - 751 008
LOK BHAVAN
BHUBANESWAR - 751 008

राज्यपाल, ओडिसा
GOVERNOR OF ODISHA

नं- 467/ 2026

4 जुलाई, 2026

संदेश

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो(भारत), जइतपुरा, बाराणासी, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह में **'मानवता के प्रहरी'** नामक प्रेरणादायी पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है।

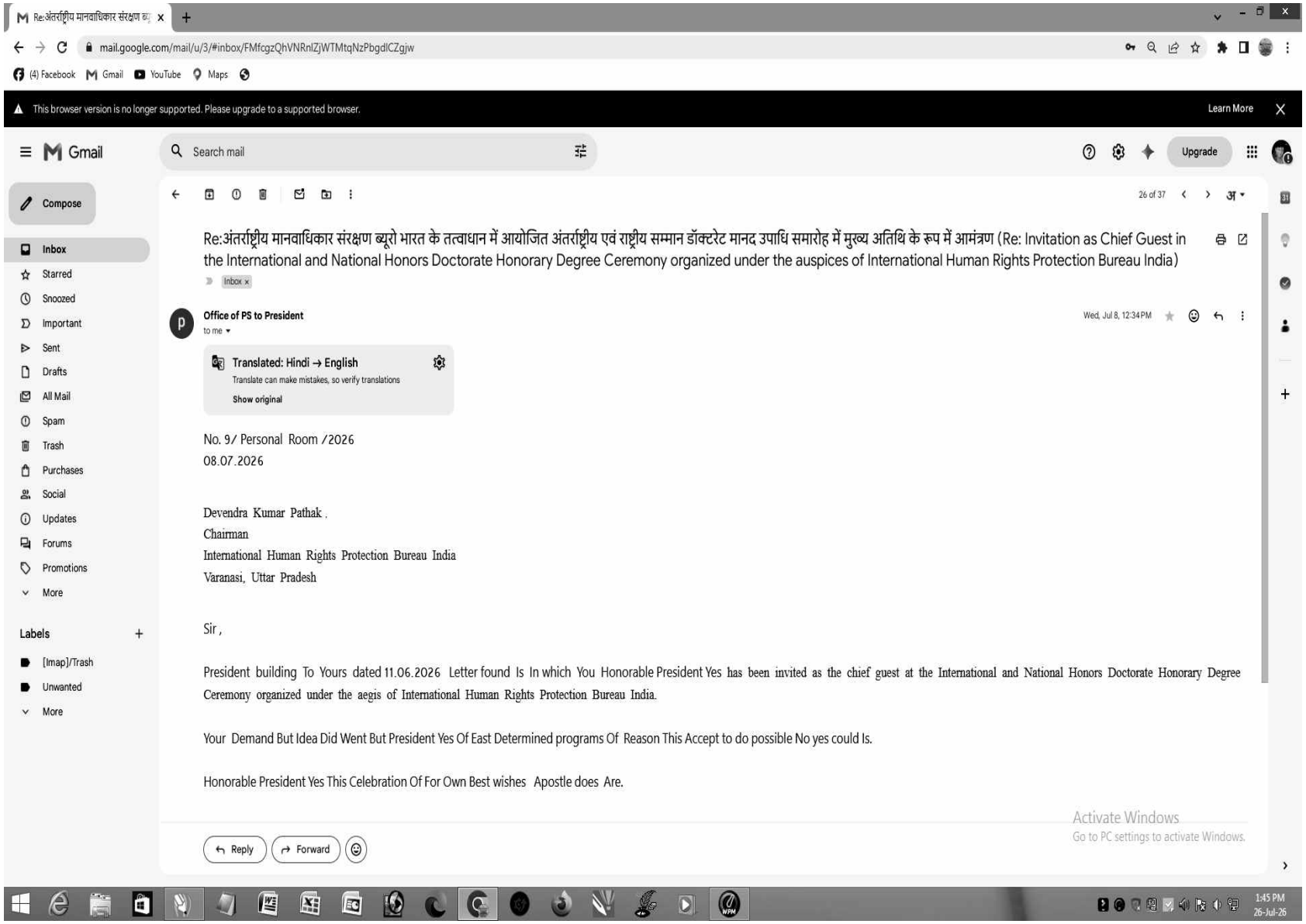
पुस्तकें ज्ञान और विचारों का सबसे शक्तिशाली माध्यम हैं जो व्यक्तित्व को विकसित करता है। पुस्तक चाहे काल्पनिक हो या गैर-काल्पनिक मुद्रित या ऑडियोबुक के रूप में उपलब्ध होती है और दुनिया को समझने तथा सही निर्णय लेने में मदद करती है। ज्ञान, मान और मर्यादा को भी श्रीवृद्धि करती है। पुस्तक की भूमिका समग्र विश्व संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता का सठीक जानकारी देने में मदद करती है।

गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक उत्थान तथा मानवाधिकारों के प्रति जनजागरण का संकल्प लेकर अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो, भारत निरंतर सेवा कार्यों में संलग्न है। ब्यूरो द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक मानवता, सामाजिक सेवा, मानवाधिकार संरक्षण तथा समाज के कमजोर एवं बंचित वर्गों के उत्थान के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों का जीवंत दस्तावेज के रुप साबित होगा, यह मेरा विश्वास है।

मैं **'मानवता के प्रहरी'** पत्रिका के लेखकों, संपादकों, पाठकों तथा इस कार्य में लगे हुए सभी सदस्यों को बधाई देते हुए इसके सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(हरि बाबू कंभमपाटि)

ई–मेल द्वारा प्राप्त महामहिम राष्ट्रपति महोदया का शुभकामना संदेश



Re:अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यू x

mail.google.com/mail/u/3/#inbox/FMfcgzQhVNRnlZjWTMtqNzPbgdlCZgjw

(4) Facebook Gmail YouTube Maps

This browser version is no longer supported. Please upgrade to a supported browser. Learn More

Gmail Search mail Upgrade

Compose

Inbox
Starred
Snoozed
Important
Sent
Drafts
All Mail
Spam
Trash
Purchases
Social
Updates
Forums
Promotions
More

Labels
[Imap]/Trash
Unwanted
More

26 of 37

Re:अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो भारत के तत्वाधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मान डॉक्टरेट मानद उपाधि समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण (Re: Invitation as Chief Guest in the International and National Honors Doctorate Honorary Degree Ceremony organized under the auspices of International Human Rights Protection Bureau India)

Inbox x

Office of PS to President
to me

Wed, Jul 8, 12:34 PM

Translated: Hindi → English
Translate can make mistakes, so verify translations
Show original

No. 9/ Personal Room /2026
08.07.2026

Devendra Kumar Pathak .
Chairman
International Human Rights Protection Bureau India
Varanasi, Uttar Pradesh

Sir ,

President building To Yours dated 11.06.2026 Letter found Is In which You Honorable President Yes has been invited as the chief guest at the International and National Honors Doctorate Honorary Degree Ceremony organized under the aegis of International Human Rights Protection Bureau India.

Your Demand But Idea Did Went But President Yes Of East Determined programs Of Reason This Accept to do possible No yes could Is.

Honorable President Yes This Celebration Of For Own Best wishes Apostle does Are.

Activate Windows
Go to PC settings to activate Windows.

Reply Forward

1:45 PM
26-Jul-26

ई–मेल द्वारा प्राप्त महामहिम उप–राष्ट्रपति महोदया का शुभकामना संदेश

REGRET: Invitation to be the Chief Guest at the International and National Honors Doctorate Honorary Degree Ceremony

Function Cell VPS functioncell-vps@gov.in via gov.in
to me

Tue, Jul 14, 4:14 PM (12 days ago)

Sir,

We acknowledge with thanks the invitation (letter dated 17.06.2026) requesting the Hon'ble Vice-President of India to preside as the Chief Guest at the International and National Honors Doctorate Honorary Degree Ceremony and for releasing the inspirational book titled "Sentinel of Humanity" at NDMC Convention Centre, New Delhi.

2. In this regard, we regret to inform you that owing to prior commitments, the Hon'ble Vice-President of India will not be able to attend the said Event. We appreciate your kind consideration and understanding and extend our best wishes for the success of the Event.

Regards,

Office of the Hon'ble Vice-President of India.
108, Church Road, New Delhi
Tel. Nos.: 011-23094951/4952

मंत्री
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार

MINISTER
FOOD PROCESSING INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

Chirag Paswan
चिराग पासवान

दिनांक : 16 जुलाई, 2026

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हुई कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा ''मानवता के प्रहरी'' नामक पुस्तक के विमोचन समारोह का आयोजन किया गया है।

मानवाधिकारों की रक्षा, सामाजिक न्याय, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण तथा समाज के वंचित एवं कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु संस्था का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह कार्यक्रम समाज में सेवा, संवेदनशीलता, समानता एवं मानवीय मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मैं कार्यक्रम की सफलता तथा सभी आयोजकों एवं प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

(चिराग पासवान)

डॉ0 देवेन्द्र पाठक,
चेयरमैन,
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)
जे. 6/7 बी.डी., जैतपुरा, वाराणसी,
उत्तर प्रदेश–221001

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय: पंचशील भवन, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली -110 049
Office: Panchsheel Bhawan, August Kranti Marg, New Delhi-110 049
दूरभाष/Tel.: +91 11 26493889, 26493890, ई–मेल/e-mail: minister.fpi@nic.in

श्याम राना
राज्यपाल के विशेष कार्याधिकारी
अरुणाचल प्रदेश

लोक भवन
ईटानगर - 791 111

No. GOV-AP/INVIT/2026
जुलाई 21, 2026

सेवा में,

डॉ. देवेन्द्र कुमार पाठक
चैयरमैन, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)
जे. 6/7-B-D, जैटपुरा
वाराणसी – 221001
उत्तर प्रदेश.

विषयः **अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मान डॉक्टरेट मानद उपाधि के संदर्भ में**।

महोदय,

अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो भारत के तत्त्वावधान में 30 अगस्त 2026 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मान डॉक्टरेट मानद उपाधि एवं **"मानवता के प्रहरी"** नामक पुस्तक का विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने हेतु अरुणाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री को आपका आमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। इसके लिए माननीय राज्यपाल श्री ने आभार व्यक्त किए हैं।

इस दौरान माननीय राज्यपाल श्री का अपने प्रदेश में पूर्व नियोजित विभिन्न कार्यक्रम होने के कारण उपरोक्त समारोह में उपस्थित होने में माननीय राज्यपाल श्री खेद व्यक्त की है।

माननीय राज्यपाल श्री ने उक्त समारोह के सफल आयोजन हेतु अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित की हैं।

सादर,

भवदीय,

श्याम राना

(श्याम राना)
राज्यपाल के विशेष कार्याधिकारी



श्रीमती निरूपमा गौड़
पूर्व मंत्री
शहरी विकास, बाल कल्याण एवं राजस्व विभाग
उत्तराखण्ड सरकार

शुभकामना संदेश

मानव समाज की प्रगति तभी सार्थक मानी जाती है जब विकास के साथ-साथ मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक न्याय, करुणा तथा मानवाधिकारों की रक्षा को भी समान महत्व दिया जाए। ऐसे प्रयास न केवल समाज को सशक्त बनाते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श और संस्कारित वातावरण का निर्माण भी करते हैं।

'मानवता के प्रहरी' ग्रंथ का प्रकाशन मानव सेवा और राष्ट्रहित के लिए समर्पित प्रेरणादायी व्यक्तित्वों के जीवन-दर्शन एवं उनके उल्लेखनीय योगदान को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक अभिनव एवं प्रशंसनीय प्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ समाज में सेवा, सद्भाव, उत्तरदायित्व और मानवाधिकारों के प्रति नई चेतना का संचार करेगा।

यह जानकर विशेष प्रसन्नता होती है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) विगत 21 वर्षों से पूर्ण समर्पण, निष्ठा एवं निरंतरता के साथ मानवाधिकार जागरूकता, महिला एवं बाल कल्याण, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। संस्था ने समाज के वंचित एवं जरूरतमंद वर्गों तक सेवा की भावना को पहुँचाकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मेरे लिए यह भी गौरव का विषय है कि मुझे इस प्रतिष्ठित संस्था के संरक्षक के रूप में मानव कल्याण के इस पावन अभियान से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं इसे केवल एक पद नहीं, बल्कि मानवता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रसेवा के प्रति अपनी नैतिक प्रतिबद्धता मानती हूँ। मेरा विश्वास है कि हम सभी के सामूहिक प्रयास समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नई दिशा प्रदान करेंगे।

आज आवश्यकता है कि हम अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी समान रूप से सजग रहें। जब समाज का प्रत्येक नागरिक सेवा, संवेदना और न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ेगा, तभी सशक्त, समरस और मानवीय भारत का निर्माण संभव होगा।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों को इस प्रेरणादायी पहल के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ। मेरी मंगलकामना है कि संस्था आने वाले वर्षों में भी इसी प्रकार मानवता की सेवा का प्रकाश फैलाती रहे और 'मानवता के प्रहरी' ग्रंथ देश-विदेश में सेवा, समर्पण और मानवीय मूल्यों का प्रेरक संदेश बनकर व्यापक सम्मान प्राप्त करे।

मेरी ओर से समस्त टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएँ।

USHA PRIYADARSHI
CHAIRPERSON

HARYANA STATE COMMISSION FOR WOMEN
Bays No. 31-34, Sehkarita Bhawan, Sector 2, Panchkula
Office: 0172-2583639, 2584039
M: 98717 22327
Email: ushapriyadarshi30@gmail.com
Email: ayogmahila@gmail.com
Website: www.hscw.in



No. HSCW/CP/2026/ 3506 **Dated : 29.07.2026**

बधाई संदेश

मानव सभ्यता की विकास-यात्रा यह सिद्ध करती है कि किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की वास्तविक प्रगति केवल आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक उपलब्धियों अथवा तकनीकी विकास से नहीं मापी जा सकती, बल्कि उसका वास्तविक मूल्यांकन उस समाज में स्थापित न्याय, समानता, मानवीय गरिमा, संवेदनशीलता तथा मानवाधिकारों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक नागरिक के सम्मान, सुरक्षा एवं अधिकारों का संरक्षण ही एक सशक्त, न्यायपूर्ण, समानतापूर्ण एवं सभ्य राष्ट्र की आधारशिला है।

ऐसे परिप्रेक्ष्य में **अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)** द्वारा विगत **21 वर्षों** से मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक न्याय, महिला एवं बाल अधिकारों के संवर्धन, जन-जागरूकता, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए समर्पित भाव से किए जा रहे सतत एवं रचनात्मक प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं अनुकरणीय हैं। यह संस्था सेवा, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व की जिस भावना के साथ कार्य कर रही है, वह निःसंदेह समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस संस्था की दो दशकों से अधिक की गौरवशाली सेवायात्रा को **'मानवता के प्रहरी'** ग्रंथ के माध्यम से अभिलेखित एवं प्रकाशित किया जाना एक अत्यंत स्वागतयोग्य, दूरदर्शी एवं ऐतिहासिक पहल है। यह ग्रंथ केवल संस्था की उपलब्धियों का दस्तावेज नहीं, बल्कि उन असंख्य समाजसेवियों, मानवाधिकार रक्षकों, स्वयंसेवकों एवं समर्पित व्यक्तित्वों के त्याग, सेवा, संघर्ष और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी अटूट निष्ठा का जीवंत इतिहास भी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ पाठकों को केवल प्रेरित ही नहीं करेगा, बल्कि उनमें संवेदनशील, उत्तरदायी एवं जागरूक नागरिक बनने की चेतना का भी संचार करेगा। वर्तमान समय में, जब मानवीय मूल्यों, सामाजिक सौहार्द एवं संवैधानिक आदर्शों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब इस प्रकार का प्रकाशन समाज में सकारात्मक सोच, सेवा-भाव, नैतिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रहित की भावना को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं **अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)** के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सहयोगियों एवं शुभचिंतकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। मेरी मंगलकामना है कि संस्था भविष्य में भी निष्पक्षता, पारदर्शिता, सेवा-निष्ठा एवं मानवीय मूल्यों के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों की रक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय चेतना के संवर्धन हेतु निरंतर उत्कृष्ट योगदान देती रहे और नई उपलब्धियों के शिखर स्थापित करे।

'मानवता के प्रहरी' निश्चय ही मानवाधिकारों, सेवा, संवेदना, न्याय, समरसता तथा राष्ट्रनिर्माण के आदर्शों को समर्पित एक प्रेरणादायी एवं कालजयी ग्रंथ सिद्ध होगा। मुझे विश्वास है कि यह कृति वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी मानवता की सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रहित के पथ पर अग्रसर होने की सतत प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

इस ऐतिहासिक एवं गरिमामय प्रकाशन के लिए मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करती हूँ तथा संस्था के उज्ज्वल, यशस्वी एवं सतत प्रगतिशील भविष्य की कामना करती हूँ।

(उषा प्रियादर्शी)
अध्यक्षा
हरियाणा राज्य महिला आयोग,
पंचकुला

श्री राकेश त्रिपाठी
सीनियर रजिस्ट्रार
लखनऊ हाईकोर्ट

शुभकामना संदेश

मानवता के प्रहरी जैसी प्रेरणादायी पुस्तक के प्रकाशन के अवसर पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह पुस्तक केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि मानवता, न्याय, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण के प्रति समर्पित एक सशक्त विचार-दस्तावेज है। मुझे विश्वास है कि इसका प्रत्येक पृष्ठ समाज में न्याय, समानता, करुणा और मानवीय गरिमा के प्रति नई चेतना का संचार करेगा।

किसी भी सभ्य समाज की वास्तविक शक्ति उसके नैतिक मूल्यों, विधि के शासन तथा मानवाधिकारों के सम्मान में निहित होती है। जब समाज का प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी निष्ठापूर्वक पालन करता है, तभी एक सशक्त, समतामूलक और न्यायपूर्ण राष्ट्र का निर्माण संभव होता है। इस दृष्टि से मानवता के प्रहरी समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक जागरूकता, न्याय, शिक्षा, सेवा तथा राष्ट्रहित के विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे सराहनीय प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ। संस्था द्वारा जनसेवा और मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु निरंतर किए जा रहे कार्य समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। ऐसी रचनात्मक पहलें न केवल जन-जागरण का माध्यम बनती हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक विद्वानों, विद्यार्थियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, विधि-जगत से जुड़े व्यक्तियों तथा समाज के प्रत्येक जागरूक नागरिक के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी। यह मानवता, न्याय और सेवा की भावना को सुदृढ़ करते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान करेगी।

मैं पुस्तक के संपादक, सहयोगी लेखकों, प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों को इस उत्कृष्ट एवं जनोपयोगी प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पुस्तक की व्यापक सफलता एवं संस्था के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।



Nihal Chand, RHJS
Sessions Judge, Special Court
(POCSO Act Cases), Pali (Rajasthan)

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल विज्ञान, प्रौद्योगिकी अथवा आर्थिक विकास नहीं है, बल्कि वह न्यायपूर्ण व्यवस्था है जो प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान, सुरक्षा और समान अवसर की रक्षा करती है। जब समाज में विधि का शासन और मानवीय संवेदनाएँ साथ-साथ चलती हैं, तभी राष्ट्र प्रगति और शांति के पथ पर अग्रसर होता है।

'मानवता के प्रहरी' नामक ग्रंथ ऐसे व्यक्तित्वों को समर्पित एक प्रेरणादायी कृति है, जिन्होंने अपने कर्म, विचार और सेवा से समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा प्रशस्त की है। यह पुस्तक केवल उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि मानव कल्याण, नैतिक उत्तरदायित्व और सामाजिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति है।

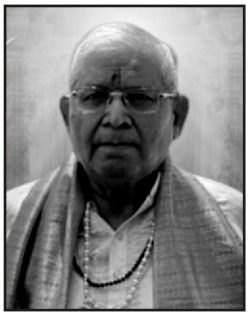
यह जानकर संतोष का अनुभव होता है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) पिछले 21 वर्षों से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने, शिक्षा को प्रोत्साहन देने, महिला एवं बाल संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन तथा सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से निरंतर सक्रिय है। संस्था द्वारा किए जा रहे रचनात्मक प्रयास समाज में विश्वास, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि न्याय और मानवाधिकार केवल विधिक विषय न रहकर प्रत्येक नागरिक के व्यवहार और संस्कार का अभिन्न अंग बनें। यदि हम अपने अधिकारों के साथ दूसरों के अधिकारों के सम्मान का भी संकल्प लें, तो एक अधिक न्यायपूर्ण, सुरक्षित और संवेदनशील समाज की स्थापना संभव है।

मेरा विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' अपने विचारोत्तेजक स्वरूप के माध्यम से समाज में सेवा, सदाचार, कर्तव्यनिष्ठा और मानवीय मूल्यों के प्रति नई चेतना का संचार करेगा। यह ग्रंथ अनेक लोगों को समाजहित में सक्रिय भूमिका निभाने तथा राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं को इस उल्लेखनीय प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि संस्था भविष्य में भी अपने सेवा-संकल्प को इसी निष्ठा और गरिमा के साथ आगे बढ़ाती रहे तथा मानवता, न्याय और सामाजिक सद्भाव के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे।

'मानवता की रक्षा ही न्याय का सर्वोच्च उद्देश्य है, और न्याय की आत्मा सदैव मानवता में ही निवास करती है।'



महामहोपाध्याय प्रो. डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय
(राष्ट्रपति सम्मानित)
कुलगुरु, आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
संरक्षक - अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत)

शुभकामना संदेश

मानवाधिकारों का वास्तविक आधार केवल संवैधानिक व्यवस्था नहीं, अपितु आत्मबोध से जागृत मानवीय चेतना है। जब मनुष्य अपने भीतर स्थित दिव्य सत्ता का साक्षात्कार करता है, तब वह प्रत्येक प्राणी में उसी परम चेतना का दर्शन करता है। ऐसी स्थिति में न किसी के साथ अन्याय करने की प्रवृत्ति रहती है और न ही किसी के अधिकारों का हनन करने का विचार। अध्यात्म हमें यह शिक्षा देता है कि समस्त मानव समाज एक ही चेतना की विविध अभिव्यक्तियाँ हैं; इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा करना ही सच्चा धर्म है।

भारतीय ऋषियों ने धर्म को केवल अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सत्य, करुणा, न्याय, संयम, क्षमा और लोकमंगल का पर्याय माना। जहाँ धर्म अपने वास्तविक स्वरूप में प्रतिष्ठित होता है, वहाँ मानवाधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता, क्योंकि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के सम्मान को अपना कर्तव्य मानता है। इसलिए मानवाधिकारों की सबसे बड़ी सुरक्षा बाहरी शक्ति नहीं, बल्कि भीतर जागृत नैतिक और आध्यात्मिक चेतना है।

'मानवता के प्रहरी' ऐसा प्रेरणास्पद ग्रंथ है जो मानवाधिकारों को केवल अधिकारों की दृष्टि से नहीं, बल्कि कर्तव्य, संस्कार, संवेदनशीलता और आध्यात्मिक उत्तरदायित्व के साथ देखने की प्रेरणा देता है। जब समाज में चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और नैतिक जीवन का विकास होता है, तभी न्याय, समरसता और शांति स्थायी रूप से स्थापित होती है। यही किसी भी सभ्य राष्ट्र की वास्तविक पहचान है।

मुझे विशेष प्रसन्नता है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत), जिसके साथ मुझे संरक्षक के रूप में जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त है, विगत वर्षों से मानव गरिमा, सामाजिक समरसता, शिक्षा, महिला सम्मान, पर्यावरण संरक्षण तथा जनसेवा के विविध क्षेत्रों में निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। यह संगठन केवल मानवाधिकारों की आवाज़ नहीं, बल्कि नैतिक जागरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों के पुनर्जागरण का एक सशक्त अभियान है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी तथा समाज में सत्य, करुणा, न्याय, सेवा और आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मैं इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि यह पावन अभियान मानवता के कल्याण, धर्ममय जीवन, सामाजिक समरसता और विश्वशांति की दिशा में निरंतर नवीन प्रेरणा प्रदान करता रहे।



श्री मनोज कुमार तिवारी
जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश
जिला - वैशाली, हाजीपुर - बिहार

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' नामक पुस्तक का प्रकाशन मानवता, न्याय, संवेदनशीलता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल्यों को समर्पित एक अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायी पहल है। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, सहयोगियों एवं इससे जुड़े सभी व्यक्तियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

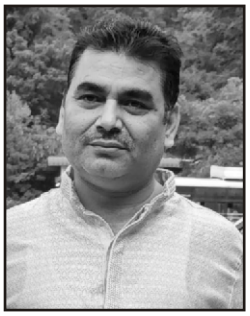
मानवाधिकारों का संरक्षण, सामाजिक न्याय की स्थापना तथा प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का सम्मान किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला है। ऐसे समय में जब विश्व अनेक सामाजिक एवं नैतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब मानवता, करुणा, समानता और संवैधानिक मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने वाले साहित्य की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' पुस्तक इन आदर्शों को समाज में सुदृढ़ करने तथा लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और न्याय के प्रति आस्था में निहित होती है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारीपूर्वक निर्वहन करता है, तभी एक न्यायपूर्ण, समरस एवं सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव होता है। इस दृष्टि से यह पुस्तक केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि मानवता, सेवा और राष्ट्रहित के प्रति समर्पण का प्रेरक संदेश है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकार जागरूकता, सामाजिक समरसता, शिक्षा, जनकल्याण एवं मानवीय मूल्यों के संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयास निस्संदेह प्रशंसनीय हैं। यह संस्था समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में सतत कार्य कर रही है, जिसके लिए यह विशेष बधाई की पात्र है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' पुस्तक समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी तथा नई पीढ़ी को न्याय, सेवा, करुणा, सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करेगी। यह प्रकाशन समाज में सद्भाव, उत्तरदायित्व और मानव गरिमा के संरक्षण के प्रति जनचेतना को और अधिक सशक्त करेगा।

इस उत्कृष्ट प्रकाशन की सफलता एवं इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) भविष्य में भी इसी प्रकार मानवता की सेवा, न्याय की प्रतिष्ठा एवं जनकल्याण के पथ पर निरंतर अग्रसर रहकर समाज को नई दिशा प्रदान करता रहे। मेरी ओर से पुनः हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।



श्री अखिलेश सिंह
जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश, समस्तीपुर

शुभकामना संदेश

मानव समाज की वास्तविक शक्ति केवल विधि के शासन में नहीं, बल्कि न्याय, संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों के समन्वय में निहित होती है। जब न्याय अपने सर्वोच्च आदर्शों के साथ करुणा, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व का रूप धारण करता है, तभी लोकतंत्र की आत्मा सुदृढ़ होती है और नागरिकों का विश्वास न्याय व्यवस्था में और अधिक प्रगाढ़ बनता है।

'मानवता के प्रहरी' जैसे प्रेरणास्पद प्रकाशन का उद्देश्य भी यही है कि समाज के उन व्यक्तित्वों के विचार जन-जन तक पहुँचें, जिन्होंने अपने कर्तव्य, चरित्र और नैतिक मूल्यों के माध्यम से न्यायपूर्ण एवं मानवीय समाज के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यह ग्रंथ केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि मानवीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और संवैधानिक आदर्शों का सशक्त दस्तावेज बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुझे विश्वास है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा किया जा रहा यह अभिनव प्रयास मानव गरिमा, समानता, न्याय तथा मानवाधिकारों के प्रति सामाजिक जागरूकता को नई दिशा प्रदान करेगा। समाज में विधि के प्रति सम्मान, कर्तव्यों के प्रति निष्ठा तथा अधिकारों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में इस प्रकार की रचनात्मक पहल अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि 'मानवता के प्रहरी' अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हो तथा यह कृति न्याय, नैतिकता, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों के संवर्धन का प्रभावशाली माध्यम बने। यह पुस्तक आने वाली पीढ़ियों को सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, संवेदनशीलता तथा संविधान के आदर्शों के प्रति प्रेरित करती रहे और समाज में न्याय एवं मानवता के प्रति नई चेतना का संचार करे।

इस पुनीत अभियान से जुड़े सभी पदाधिकारियों, सहयोगियों, लेखकों एवं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त परिवार को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।



श्री देवकान्त शुक्ला
अपर जिला एव सत्र न्यायाधीश
कानपुर

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता की प्रगति का वास्तविक आधार केवल विकास की गति नहीं, बल्कि न्याय, संवैधानिक मूल्यों और मानवीय गरिमा की रक्षा के प्रति समाज की अटूट प्रतिबद्धता है। जब किसी राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों का सम्मान, विधि का निष्पक्ष शासन और मानवता के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित होता है, तभी वह समाज स्थायी शांति, समरसता और प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर होता है।

ऐसे समय में 'मानवता के प्रहरी' का प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय एवं सार्थक पहल है। यह ग्रंथ केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि उन व्यक्तित्वों के सेवा-संकल्प, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व का जीवंत दस्तावेज है, जिन्होंने अपने कार्यों से मानवता, न्याय, सेवा और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है। यह पुस्तक समाज को यह संदेश देती है कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व केवल अपने अधिकारों तक सीमित नहीं, बल्कि दूसरों के अधिकारों की रक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन से भी जुड़ा हुआ है।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों एवं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वानों, लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मानवाधिकारों के संरक्षण, विधिक जागरूकता, सामाजिक न्याय तथा मानवीय मूल्यों के प्रसार हेतु आपका यह सतत प्रयास निस्संदेह समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करेगा।

मेरा विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए ही नहीं, बल्कि आने वाले समय के लिए भी प्रेरणा, जागरूकता और उत्तरदायित्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होगी। यह पुस्तक सेवा, न्याय, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण के उन आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने में सफल होगी, जिन पर एक सशक्त, न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज की नींव टिकी होती है।

मैं इस गरिमामय प्रकाशन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह अभियान मानव गरिमा, सामाजिक सद्भाव, न्यायप्रियता और लोककल्याण की भावना को निरंतर सुदृढ़ करता रहे तथा राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपना अमूल्य योगदान देता रहे।

मेरी ओर से 'मानवता के प्रहरी' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।

॥ सुरक्षा आपकी-संकल्प हमारा ॥

श्री राम सेवक गौतम, आई.पी.एस.
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,
पी.टी.एस. मुरादाबाद।

पता:- पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, मुरादाबाद।
मो:- 9305458028
e-mail:- ramsewakgautamips2013
@gmail.com

शुभाशंसा एवं मंगलकामनाएँ



अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो, भारत द्वारा मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, समानता एवं मानव कल्याण जैसे महत्वपूर्ण विषयों के प्रति जन-जागरूकता उत्पन्न करने की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायी है। **"मानवता के प्रहरी"** पुस्तक के माध्यम से समाज में मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशीलता, जरूरतमंद एवं वंचित वर्गों के प्रति सहयोग तथा मानवीय मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने का संदेश निश्चित रूप से व्यापक रूप से पहुँचेगा।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो, भारत द्वारा **"मानवता के प्रहरी" पुस्तक के विमोचन समारोह** के अवसर पर संस्था के अध्यक्ष **डॉ. देवेन्द्र कुमार पाठक जी** एवं समस्त टीम को हार्दिक बधाई। ईश्वर से कामना है कि यह पुस्तक समाज में मानवता, सेवा, समानता एवं सद्भाव की भावना को और प्रबल करने में सार्थक भूमिका निभाए तथा संस्था अपने सामाजिक सरोकारों के माध्यम से निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे तथा उज्ज्वल भविष्य एवं ऐसे ही उत्कृष्ट कार्यों के लिए अनंत शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

दिनांकः-04/08/2026

(राम सेवक गौतम)
IPS



श्री दीपक सिंह वर्मा
जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश
पूर्णिया (बिहार)

शुभकामना संदेश

किसी भी राष्ट्र की विधिक व्यवस्था तभी प्रभावशाली मानी जा सकती है, जब उसके केंद्र में केवल कानून नहीं, बल्कि मनुष्य की गरिमा भी सुरक्षित हो। न्याय का वास्तविक उद्देश्य केवल विवादों का निस्तारण करना नहीं, बल्कि समाज में ऐसा वातावरण निर्मित करना है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सम्मानित, सुरक्षित और समान अवसरों का अधिकारी अनुभव करे। यही विचार एक सभ्य और उत्तरदायी समाज की आधारशिला है।

'मानवता के प्रहरी' शीर्षक से प्रकाशित यह कृति अपने स्वरूप में विशिष्ट है। यह केवल व्यक्तित्वों का संकलन नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों का अभिलेख है जो समाज को विभाजन नहीं, बल्कि समन्वय की दिशा में अग्रसर करते हैं। जब सेवा, करुणा, उत्तरदायित्व और सामाजिक न्याय जैसे विषय साहित्य का हिस्सा बनते हैं, तब उनका प्रभाव पीढ़ियों तक बना रहता है।

आज आवश्यकता केवल अधिकारों की चर्चा करने की नहीं, बल्कि कर्तव्यों के प्रति जागरूकता विकसित करने की भी है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने आचरण में निष्पक्षता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व को स्थान दे, तो अनेक सामाजिक चुनौतियाँ स्वतः कम हो सकती हैं। न्यायालय कानून के माध्यम से व्यवस्था स्थापित करते हैं, किंतु समाज का चरित्र उसके नागरिकों के नैतिक आचरण से निर्मित होता है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक उन व्यक्तियों के कार्यों को व्यापक पहचान देगी जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। ऐसे प्रयास केवल सम्मान के पात्र नहीं होते, बल्कि वे दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं। किसी भी समाज की वास्तविक पूँजी उसके संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक ही होते हैं।

मैं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वानों, सहयोगियों तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामना है कि 'मानवता के प्रहरी' ज्ञान, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का एक विश्वसनीय दस्तावेज बनकर दीर्घकाल तक समाज का मार्गदर्शन करे तथा मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सफल हो।

श्री अुतल कुष्ण अग्रवाल
जिला जज एवं अपर सत्र न्यायाधीश
दिल्ली

शुभकामना संदेश

अङ्गेन गात्रं नयनेन वक्त्रंन्यायेन राज्यं लवणेन भोज्यम्। धर्मेण हीनं खलु जीवितं चन राजते चन्द्रमसा विना निशा॥

अर्थात्, बिना किसी अंग के मानव शरीर, बिना आँखों वाला चेहरा, प्रभावी और शक्तिशाली न्यायपालिका के बिना राष्ट्र, बिना नमक के पका हुआ भोजन, धर्मपरायणता और धर्म का पालन किए बिना मानव जीवन, वास्तव में सुशोभित या तेजस्वी नहीं कहलाते, ठीक वैसे ही जैसे आकाश में चंद्रमा के बिना अंधेरी रात।

यह श्लोक न्याय की महत्ता को बताता है । किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक शक्ति केवल उसके विधिक ढाँचे में नहीं, बल्कि उन नैतिक मूल्यों में निहित होती है जो प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, समानता, स्वतंत्रता और न्यायपूर्ण व्यवहार की रक्षा करते हैं। जब समाज में विधि के शासन के साथ मानवीय संवेदनशीलता का समन्वय स्थापित होता है, तभी न्याय अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करता है और नागरिकों का विश्वास सुदृढ़ होता है।

'मानवता के प्रहरी' का प्रकाशन इसी व्यापक दृष्टिकोण का सार्थक परिचायक है। यह कृति केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि न्याय, उत्तरदायित्व, सामाजिक चेतना तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ करने का एक प्रशंसनीय प्रयास है। ऐसी रचनाएँ समाज में विधिक चेतना, संवैधानिक आदर्शों तथा मानव सम्मान के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करती हैं।

मानवाधिकारों की अवधारणा किसी सीमा, भाषा अथवा संस्कृति तक सीमित नहीं है। यह संपूर्ण मानव समाज की साझा नैतिक प्रतिबद्धता है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन, सम्मान, समान अवसर और न्यायपूर्ण व्यवहार की रक्षा सुनिश्चित की जाए। जब साहित्य और सामाजिक चिंतन इन आदर्शों को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य करते हैं, तब वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम बन जाते हैं।

मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' न्यायप्रियता, नैतिक उत्तरदायित्व, सामाजिक समरसता, करुणा तथा विधि के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को व्यापक जनमानस तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए यह कृति संविधान की भावना, मानव गरिमा और सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने का प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकती है।

मैं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल, लेखकों, चिंतकों तथा सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि यह पुस्तक समाज में न्याय, सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, मानव गरिमा तथा वैश्विक मानवीय मूल्यों के संवर्धन में उल्लेखनीय योगदान दे तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के जनजागरण एवं मानव सेवा के उद्देश्य को नई ऊर्जा प्रदान करे।

'न्याय तभी पूर्ण माना जाता है जब उसकी अनुभूति समाज के अंतिम व्यक्ति तक सम्मान, सुरक्षा और विश्वास के रूप में पहुँचे; यही मानवता की सबसे बड़ी विजय है।'



डॉ. ज्ञान प्रकाश
अपर जिलाधिकारी,
सिद्धार्थनगर (उत्तर प्रदेश)

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' नामक पुस्तक का प्रकाशन समाज में मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, संवैधानिक आदर्शों तथा मानवाधिकारों के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक अत्यंत प्रशंसनीय एवं सार्थक पहल है। इस प्रेरणादायी प्रकाशन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, सहयोगियों एवं इस अभियान से जुड़े सभी व्यक्तियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

एक सशक्त एवं विकसित समाज का निर्माण केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता तथा नागरिक उत्तरदायित्व से होता है। जब समाज का प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक पालन करता है, तभी सुशासन, न्याय और विकास की सुदृढ़ नींव स्थापित होती है। मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' पुस्तक समाज में इन्हीं उच्च आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बनेगी।

वर्तमान समय में मानवाधिकारों की रक्षा, सामाजिक न्याय की स्थापना, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा वंचित वर्गों के उत्थान जैसे विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन विषयों पर जनचेतना विकसित करने में साहित्य की भूमिका सदैव प्रभावशाली रही है। यह पुस्तक केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण, नैतिकता और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रेरित करने वाला एक सशक्त दस्तावेज है, जो पाठकों को सकारात्मक चिंतन एवं सामाजिक सहभागिता के लिए प्रेरित करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकार जागरूकता, जनकल्याण, सामाजिक समरसता तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्वों का सम्मान एवं उनके प्रेरणादायी कार्यों को जनसामान्य तक पहुँचाने का यह प्रयास निश्चित रूप से अनुकरणीय है। ऐसे प्रयास समाज में सकारात्मक ऊर्जा, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रहित की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' पुस्तक विद्यार्थियों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, प्रशासनिक अधिकारियों तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी। यह प्रकाशन मानवता, सेवा, सद्भाव, न्याय एवं कर्तव्यनिष्ठा के मूल्यों को सुदृढ़ करते हुए समाज को एक नई सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा।

मैं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) भविष्य में भी इसी प्रकार समाजहित, मानवाधिकार संरक्षण, जनजागरण एवं राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट कार्य करता रहे। 'मानवता के प्रहरी' व्यापक जनमानस को प्रेरित करे, यही मेरी मंगलकामना है। सभी संबंधित व्यक्तियों को इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए पुनः हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।



गोपाल प्रसाद चमड़िया
अधिवक्ता - बेगुसराय (बिहार)
प्रदेश अध्यक्ष - आईएचआरपीबी (इण्डिया)

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता का इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, अपितु उन महनीय आत्माओं की तपःपूत साधना का अमर आख्यान है जिन्होंने अपने जीवन को लोकमंगल, सेवा, करुणा एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित कर दिया। ऐसे ही प्रेरणास्पद जीवन-वृत्तों, सामाजिक उपलब्धियों तथा मानवीय चेतना के स्वर्णिम अध्यायों को समेटे हुए 'मानवता के प्रहरी' ग्रंथ का प्रकाशन निःसंदेह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुझे यह जानकर विशेष हर्ष का अनुभव हो रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) अपनी इक्कीस वर्षों की अविरल मानवसेवा, जनकल्याण एवं सामाजिक जागरण की गौरवशाली यात्रा को इस ग्रंथ के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। यह संस्था विगत दो दशकों से अधिक समय से मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक न्याय, शिक्षा के प्रसार, निर्धन एवं असहाय वर्गों के उत्थान, महिला सशक्तिकरण, बाल संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, आपदा राहत, जनकल्याणकारी अभियानों तथा राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता के संवर्धन हेतु निरंतर समर्पित भाव से कार्य करती रही है। यह सेवायात्रा न केवल प्रशंसनीय है, बल्कि समाज के लिए अनुकरणीय प्रेरणा भी है।

'मानवता के प्रहरी' केवल एक स्मारिका अथवा पुस्तक नहीं, बल्कि सेवा, त्याग, संवेदना, राष्ट्रनिष्ठा एवं मानवीय उत्तरदायित्व का जीवंत दस्तावेज है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर उन अनगिनत सेवाकार्यों की अनुगूँज सुनाई देती है, जिनके माध्यम से संस्था ने समाज के उपेक्षित, वंचित एवं पीड़ित वर्गों के जीवन में आशा का प्रकाश प्रज्वलित करने का सतत प्रयास किया है। यह ग्रंथ आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देगा कि समाज का वास्तविक उत्थान केवल विचारों से नहीं, बल्कि सतत सेवा, समर्पण और कर्मयोग से संभव होता है।

एक अधिवक्ता होने के नाते मेरा दृढ़ विश्वास है कि न्याय की वास्तविक प्रतिष्ठा तभी संभव है, जब समाज में मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, मानवीय गरिमा का संरक्षण तथा सेवा की भावना निरंतर विकसित होती रहे। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) ने अपने इक्कीस वर्षों के सतत प्रयासों से इन आदर्शों को व्यवहारिक धरातल पर प्रतिष्ठित करने का सराहनीय कार्य किया है। यह संस्था वास्तव में मानवता, न्याय एवं लोकमंगल की सशक्त संवाहक है।

मैं 'मानवता के प्रहरी' के प्रकाशन से जुड़े समस्त संपादक मंडल, लेखकों, सहयोगियों एवं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि यह प्रेरणादायी ग्रंथ समाज में सेवा, सद्भाव, संवेदनशीलता एवं मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रकाश स्तंभ बनकर दीर्घकाल तक जनमानस का मार्गदर्शन करता रहे तथा मानवता की सेवा का यह पावन अभियान निरंतर नवीन ऊँचाइयों को प्राप्त करे।



श्री प्रभाकर त्रिपाठी
उप-महानिरीक्षक (डीआईजी)
केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल
(सीआरपीएफ) डिब्रूगढ़, असम

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि समाज की वास्तविक उन्नति केवल विज्ञान, तकनीक अथवा संसाधनों के विस्तार से नहीं होती, बल्कि उस मानवीय चेतना से होती है जो प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान, अधिकार और कर्तव्य को समान महत्त्व देती है। सेवा, करुणा, न्याय और राष्ट्रनिष्ठा जैसे शाश्वत आदर्श जब किसी संस्था के जीवन-दर्शन का अंग बन जाते हैं, तब उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य इतिहास के स्वर्णिम अध्याय का रूप धारण कर लेता है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा विगत 21 वर्षों से समाज के विविध आयामों में निःस्वार्थ सेवा, मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय एकता, जनकल्याण तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु किए गए सतत् एवं समर्पित प्रयास निस्संदेह अभिनंदनीय हैं। इन प्रेरणादायी कार्यों को 'मानवता के प्रहरी' नामक ग्रंथ के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाना केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि सेवा-साधना के अमूल्य इतिहास का संरक्षण है।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ उन अनगिनत व्यक्तियों के संघर्ष, त्याग, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का दर्पण बनेगा, जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के मानवता को अपना सर्वोच्च धर्म मानकर कार्य किया। यह पुस्तक पाठकों को केवल जानकारी ही नहीं देगी, बल्कि उनके अंतर्मन में सेवा, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के संस्कारों का भी संचार करेगी। वर्तमान समय में, जब मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक अनुभव की जा रही है, ऐसे में इस प्रकार का प्रकाशन समाज को नई दिशा प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

मैं इस गौरवपूर्ण अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, समर्पित कार्यकर्ताओं, सहयोगियों तथा शुभेच्छुओं को हार्दिक साधुवाद एवं शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि यह संस्था अपने सेवा-व्रत, निष्पक्ष कार्यशैली और मानवीय प्रतिबद्धता के बल पर आने वाले वर्षों में भी समाज के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत बनी रहे तथा मानव गरिमा, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण में निरंतर नई उपलब्धियाँ अर्जित करे।

'मानवता के प्रहरी' निश्चय ही केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि मानवता के प्रति समर्पित विचारों, आदर्शों और कर्मयोग की ऐसी अमूल्य धरोहर सिद्ध होगी, जो आने वाली पीढ़ियों को भी सेवा, संवेदना और राष्ट्रहित के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

इस ऐतिहासिक एवं गौरवशाली प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई, मंगलकामनाएँ एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभाशंसाएँ।



माननीय अनिल कुमार पांडे
पूर्व विधायक,
लंभुआ (सुलतानपुर), उत्तर प्रदेश

शुभकामना संदेश

मेरे विचार में किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी मानवीय संवेदनाएँ, न्यायप्रिय व्यवस्था और सामाजिक एकता होती है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति सम्मान, सुरक्षा और समान अवसर के साथ जीवन व्यतीत करता है, तभी लोकतंत्र अपने वास्तविक स्वरूप में सशक्त बनता है। यही भावना राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है।

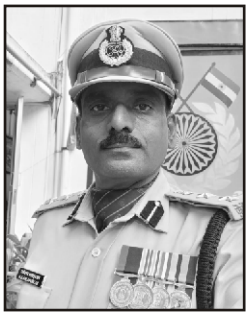
'मानवता के प्रहरी' केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि उन व्यक्तित्वों का प्रतीक है जो समाज में सेवा, न्याय, करुणा और मानवीय मूल्यों की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित रखते हैं। मेरा विश्वास है कि मानवता की रक्षा केवल कानूनों से नहीं, बल्कि समाज की जागरूकता, नैतिकता और पारस्परिक सहयोग से होती है। जब हम किसी पीड़ित, वंचित अथवा असहाय व्यक्ति का हाथ थामते हैं, तभी सच्चे अर्थों में मानवता का सम्मान करते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) मानवाधिकारों के प्रति जन-जागरण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सेवा के मूल्यों को सुदृढ़ करने की दिशा में सतत कार्य कर रहा है। यह संगठन समाज के विभिन्न वर्गों को एक सूत्र में जोड़ते हुए मानव गरिमा, न्याय, समानता और राष्ट्रीय एकता के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। ऐसे प्रयास न केवल वर्तमान समाज को दिशा देते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

मेरे विचार से अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का पालन भी उतना ही आवश्यक है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने सामाजिक दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करे, तो अन्याय, भेदभाव और वैमनस्य जैसी चुनौतियों पर सहज ही विजय प्राप्त की जा सकती है। समाज की वास्तविक उन्नति तभी संभव है, जब विकास के साथ नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी समान महत्व दिया जाए।

मैं विश्वास करता हूँ कि सेवा, समर्पण और सद्भाव की भावना ही भारत की सांस्कृतिक पहचान है। हमें ऐसा वातावरण निर्मित करना होगा जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान मिले, युवाओं को सकारात्मक दिशा प्राप्त हो, महिलाओं की गरिमा सुरक्षित रहे तथा समाज में भाईचारे और सहयोग की संस्कृति निरंतर विकसित होती रहे।

'मानवता के प्रहरी' जैसी प्रेरणादायी पहल तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के माध्यम से प्रसारित मानवीय मूल्यों का यह अभियान निश्चित रूप से समाज में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बनेगा। आइए, हम सभी न्याय, करुणा, सेवा और राष्ट्रीय एकता के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात कर एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें, जहाँ मानवता ही सबसे बड़ी पहचान और सबसे बड़ा धर्म बने।



Rajeshwar S. Balapurkar
Commandant, 95th Battalion,
Central Reserve Police Force (CRPF)
Shri Kashi Vishwanath Temple, Varanasi

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि उन अनगिनत व्यक्तित्वों के जीवन-मूल्यों, सेवा-भाव, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्र समर्पण का जीवंत दस्तावेज है, जिन्होंने अपने कर्मों से समाज को प्रेरणा देने का कार्य किया है। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के प्रकाशन पर मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) एवं इसके समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं होती; यह समाज में विश्वास, शांति और व्यवस्था का आधार भी है। जिस प्रकार एक प्रहरी बिना किसी अपेक्षा के अपने दायित्वों का निर्वहन करता है, उसी प्रकार समाज में मानवता, करुणा, अनुशासन और पारस्परिक सम्मान के मूल्यों की रक्षा करना भी हम सभी का सामूहिक दायित्व है। जब सुरक्षा और संवेदनशीलता एक साथ आगे बढ़ते हैं, तभी एक सशक्त, सुरक्षित और सभ्य राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर केवल हमारे प्राचीन मंदिरों, तीर्थों और स्मारकों में ही नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों में भी निहित है जो हमें एक-दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग और उत्तरदायित्व का भाव सिखाते हैं। 'मानवता के प्रहरी' इन मूल्यों को शब्दों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सार्थक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित रूप से नई पीढ़ी में राष्ट्रप्रेम, सामाजिक उत्तरदायित्व, सेवा और मानवीय चेतना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करेगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता के साथ-साथ नैतिकता, अनुशासन और मानव गरिमा के संरक्षण को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दें। जब समाज का प्रत्येक नागरिक स्वयं को मानवता का प्रहरी मानकर अपने दायित्वों का निर्वहन करेगा, तब हमारा राष्ट्र और अधिक सशक्त, सुरक्षित एवं गौरवशाली बनेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी तथा सेवा, समर्पण और मानव कल्याण की भावना को नई ऊर्जा प्रदान करेगी। मैं इस उत्कृष्ट प्रकाशन की सफलता, इसके व्यापक प्रसार तथा इससे जुड़े सभी रचनाकारों, सहयोगियों एवं आयोजकों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

मेरी ओर से 'मानवता के प्रहरी' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।



Adv. Swati Singhania
Advocate,
Supreme Court

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता का भविष्य केवल विधियों के निर्माण से सुरक्षित नहीं होता, बल्कि उन मूल्यों के संरक्षण से सुनिश्चित होता है जो प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और न्यायपूर्ण जीवन के अधिकार को सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हैं। जब विधि, नैतिकता और मानवीय संवेदनाएँ एक-दूसरे के साथ समन्वय स्थापित करती हैं, तभी एक ऐसा समाज निर्मित होता है जहाँ न्याय केवल न्यायालयों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि प्रत्येक नागरिक के जीवन का अभिन्न आधार बन जाता है।

'मानवता के प्रहरी' का प्रकाशन इसी उच्च आदर्श का सशक्त प्रतिबिंब है। यह पुस्तक केवल विचारों का संकलन नहीं, बल्कि मानव गरिमा, संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा वैश्विक मानवीय चेतना के प्रति समर्पित एक प्रेरक अभियान है। विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकारों के संरक्षण, जन-जागरूकता और मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु किए जा रहे सतत प्रयास इस प्रकाशन को और अधिक सार्थक एवं प्रभावशाली बनाते हैं।

विधि का उद्देश्य केवल विवादों का समाधान करना नहीं, बल्कि न्याय के माध्यम से समाज में विश्वास, समान अवसर और मानव सम्मान की स्थापना करना भी है। इसी प्रकार मानवाधिकार केवल संवैधानिक या अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों में निहित सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के सम्मानजनक जीवन का नैतिक एवं सार्वभौमिक अधिकार हैं। जब साहित्य इन आदर्शों को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य करता है, तब वह सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन जाता है।

मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' समाज में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, विधिक साक्षरता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा न्याय के प्रति सम्मान की भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह पुस्तक युवाओं, विधि के विद्यार्थियों, अधिवक्ताओं, न्यायविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा प्रत्येक जागरूक नागरिक को मानवता और न्याय के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराएगी।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत), इस पुस्तक के संपादक मंडल, सभी लेखकों तथा सहयोगियों को इस प्रेरणादायी प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। मेरी मंगलकामना है कि 'मानवता के प्रहरी' मानवाधिकारों की संस्कृति को सुदृढ़ करने, न्याय के प्रति जनविश्वास को और अधिक सशक्त बनाने तथा समाज में संवेदनशील, उत्तरदायी एवं न्यायपूर्ण विचारधारा के विस्तार का एक प्रभावी माध्यम बने। यह कृति आने वाली पीढ़ियों के लिए मानव गरिमा, विधि के शासन और मानवीय मूल्यों का एक स्थायी प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हो।

'जब न्याय मानवता का संरक्षण करता है, तभी विधि अपने सर्वोच्च उद्देश्य को प्राप्त करती है और समाज वास्तविक अर्थों में सभ्य बनता है।'

श्री हितेश अग्रवाल
सीनियर जज, सिविल डिवीजन
वाराणसी

शुभकामना संदेश

किसी भी राष्ट्र की स्थायी प्रगति का आधार केवल उसकी भौतिक उपलब्धियाँ नहीं होतीं, बल्कि वह नैतिक चेतना होती है जो न्याय, कर्तव्य, संवेदनशीलता और मानवीय सम्मान जैसे मूल्यों को जीवन का अभिन्न अंग बनाती है। जब समाज में विधि के शासन के साथ-साथ मानवीय दृष्टिकोण का विस्तार होता है, तभी नागरिकों के बीच विश्वास, समानता और सामाजिक सौहार्द का वातावरण निर्मित होता है।

'मानवता के प्रहरी' का प्रकाशन इसी उच्च उद्देश्य की सार्थक अभिव्यक्ति है। यह कृति उन व्यक्तित्वों के प्रेरक जीवन, सेवा-संकल्प और सामाजिक उत्तरदायित्व का दस्तावेज है जिन्होंने अपने कर्म, विचार और आचरण से समाज को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया है। यह पुस्तक केवल उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, नैतिक आदर्शों और लोकहित की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा इस प्रेरणादायी पहल के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करता हूँ। मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, सामाजिक न्याय, विधिक चेतना और मानवीय गरिमा के संरक्षण के लिए किया जा रहा आपका सतत प्रयास निःसंदेह समाज में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बनेगा। ऐसे प्रयास नागरिकों में अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तित्वों के प्रेरक जीवन को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए युवाओं में सेवा, सत्यनिष्ठा, अनुशासन और राष्ट्रहित के प्रति समर्पण का भाव जागृत करेगी। यह प्रकाशन आने वाले वर्षों में सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों और मानवीय दायित्वों के संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेगा।

इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन से जुड़े सभी संपादकों, लेखकों, समाजसेवियों एवं सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपका यह सत्प्रयास निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे तथा मानवता, न्याय, करुणा और सामाजिक सद्भाव का यह संदेश देश-विदेश में निरंतर प्रसारित होता रहे।

'मानवता के प्रहरी' के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ।



श्री रवि कुमार
एसीजेएम
आगरा

शुभकामना संदेश

किसी भी सभ्य राष्ट्र की पहचान उसकी आर्थिक शक्ति से नहीं, बल्कि न्याय की निष्पक्षता, कानून के प्रति सम्मान और प्रत्येक नागरिक की गरिमा की रक्षा से होती है। जब न्याय व्यवस्था समाज में विश्वास, समानता और उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करती है, तब लोकतंत्र अपनी वास्तविक शक्ति प्राप्त करता है। न्याय और मानवता का संबंध परस्पर पूरक है, क्योंकि न्याय का अंतिम उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार सुनिश्चित करना है।

ऐसे समय में 'मानवता के प्रहरी' का प्रकाशन अत्यंत सराहनीय एवं दूरदर्शी पहल है। यह केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि सेवा, कर्तव्य, नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं के उन प्रेरक आयामों का संकलन है, जो समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। इस ग्रंथ में संकलित विचार और व्यक्तित्व यह संदेश देते हैं कि सच्चा विकास तभी संभव है, जब अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी समान निष्ठा हो।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के इस महत्वपूर्ण प्रयास की हृदय से सराहना करता हूँ। मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, विधिक चेतना और मानवीय मूल्यों के संवर्धन की दिशा में आपका यह अभियान निस्संदेह समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनेगा। ऐसे प्रयास नागरिकों में न्याय, अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक सहभागिता की भावना को और अधिक सशक्त करते हैं।

मेरा विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होगी। यह पुस्तक समाज के प्रत्येक वर्ग को सत्यनिष्ठा, सेवा, संवेदनशीलता और विधि के सम्मान का संदेश देते हुए राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

इस उत्कृष्ट प्रकाशन से जुड़े सभी संपादकों, लेखकों, समाजसेवियों एवं सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह प्रेरणादायी अभियान निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करे तथा मानवता, न्याय और सामाजिक समरसता की भावना को और अधिक सुदृढ़ करता रहे।

'मानवता के प्रहरी' के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।



मा. दिनेश चौधरी
पूर्व विधायक
केराकत विधानसभा -जौनपुर

शुभकामना संदेश

मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और मानवाधिकारों की रक्षा प्रत्येक सभ्य समाज का सर्वोच्च दायित्व है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा समाज में न्याय, समानता, सेवा, करुणा एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने हेतु निरंतर उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। यह संस्था न केवल मानवाधिकारों के प्रति जन-जागरूकता का विस्तार कर रही है, बल्कि वंचित, पीड़ित एवं जरूरतमंद लोगों के जीवन में आशा और सम्मान का संचार भी कर रही है।

'मानवता के प्रहरी' केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण की प्रेरणादायी यात्रा का सशक्त दस्तावेज है। इस ग्रंथ के माध्यम से उन विभूतियों के प्रेरणास्पद कार्यों को समाज के समक्ष लाया जा रहा है, जिन्होंने मानवता, शिक्षा, न्याय, चिकित्सा, सामाजिक उत्थान, महिला सशक्तिकरण, युवा विकास एवं जनकल्याण के क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देकर समाज को नई दिशा प्रदान की है।

मेरा विश्वास है कि ऐसे प्रयास समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने, मानवीय संवेदनाओं को सशक्त बनाने तथा नई पीढ़ी को सेवा, नैतिकता और राष्ट्रहित के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। आज आवश्यकता है कि हम सभी जाति, धर्म, भाषा एवं क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता की भावना को सर्वोपरि रखें और प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान, अधिकार एवं गरिमा की रक्षा के लिए संकल्पित होकर कार्य करें।

मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों को उनके इस सराहनीय अभियान के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, 'मानवता के प्रहरी' के सफल प्रकाशन एवं इसके माध्यम से समाज में मानवाधिकारों, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के संदेश के व्यापक प्रसार हेतु अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह प्रेरणादायी अभियान निरंतर प्रगति करता रहे तथा मानव सेवा, सामाजिक न्याय और विश्व बंधुत्व की भावना को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सदैव सफल हो।



आचार्य लोकेश जी महाराज
श्रीकृष्ण वैदिक ज्योतिष परामर्श केंद्र
एवं भगवती ज्ञान यज्ञ उद्गम ट्रस्ट,
विनायक कुंज, रुड़की,
जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

शुभकामना संदेश

''मानवता के प्रहरी' ग्रंथ के प्रकाशन पर मैं अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह अत्यंत हर्ष एवं संतोष का विषय है कि वर्तमान समय में, जब समाज अनेक प्रकार की नैतिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, ऐसे समय में मानवता, सेवा, करुणा, सद्भाव, धर्म और राष्ट्रहित जैसे श्रेष्ठ मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का यह सराहनीय प्रयास किया गया है।

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि समस्त सृष्टि के कल्याण, मानव सेवा और नैतिक आदर्शों की स्थापना में निहित है। भारतीय संस्कृति का मूल संदेश 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' हमें समस्त मानव समाज को एक परिवार मानकर सेवा, प्रेम, सहयोग और समरसता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यही भावना इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

'मानवता के प्रहरी' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि समाज के उन प्रेरणास्रोत व्यक्तित्वों के जीवन, विचारों, संघर्षों एवं सेवा-समर्पण का जीवंत दस्तावेज है, जिन्होंने निस्वार्थ भाव से मानव कल्याण, सामाजिक उत्थान, राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। ऐसे महान व्यक्तित्वों का परिचय समाज को नई दिशा, नई ऊर्जा और सकारात्मक प्रेरणा प्रदान करेगा।

मैं इस ग्रंथ के प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वानों, लेखकों, सहयोगियों एवं विशेष रूप से इसके संपादक एवं आयोजकों को साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने समाज के लिए एक ऐसा प्रेरणादायी साहित्य उपलब्ध कराया है, जो आने वाली पीढ़ियों को सेवा, सदाचार, आध्यात्मिकता एवं मानवीय मूल्यों के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता रहेगा।

भगवान श्रीकृष्ण एवं माँ भगवती से मेरी प्रार्थना है कि यह ग्रंथ प्रत्येक पाठक के जीवन में सत्य, धर्म, करुणा, सेवा, सद्भाव और आत्मविश्वास का संचार करे तथा मानवता के कल्याण का एक सशक्त माध्यम बने। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' समाज में जागरूकता, नैतिक चेतना और मानव सेवा की भावना को सुदृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस प्रेरणादायी ग्रंथ के सफल प्रकाशन पर मैं पुनः अपनी हार्दिक बधाई एवं अनंत मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह पुण्य प्रयास निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे तथा समस्त मानव समाज के लिए प्रेरणा का प्रकाश-स्तंभ बनकर सदैव आलोकित होता रहे।



परम पूज्या माँ चैतन्य मीराजी
श्रीमद्भागवत कथाव्यास

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' ग्रंथ के प्रकाशन पर मैं अपनी ओर से हार्दिक आशीर्वाद , मंगलकामनाएँ एवं शुभाशीष प्रदान करती हूँ। यह ग्रंथ केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि मानवता, धर्म, सेवा, करुणा और सनातन संस्कृति के दिव्य आदर्शों का जीवंत प्रकाश-स्तंभ है। ऐसे समय में जब संसार भौतिकता की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है, तब मानवता, आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को पुनः जागृत करने का यह पावन प्रयास निश्चय ही अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

श्रीमद्भागवत महापुराण हमें सिखाता है कि मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है जब उसमें ईश्वर के प्रति भक्ति, समस्त प्राणियों के प्रति करुणा तथा समाज के प्रति सेवा का भाव विद्यमान हो। भगवान श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन धर्म, प्रेम, सत्य, करुणा और लोकमंगल का अनुपम संदेश देता है। यही दिव्य संदेश इस प्रेरणादायी ग्रंथ 'मानवता के प्रहरी' के माध्यम से समाज तक पहुँचाने का सुंदर प्रयास किया गया है।

मानवता ही सच्चा धर्म है और सेवा ही सर्वोच्च साधना। जो व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के समाज, राष्ट्र और मानव कल्याण के लिए समर्पित होकर कार्य करता है, वही वास्तव में ईश्वर का प्रिय भक्त होता है। इस ग्रंथ में ऐसे अनेक प्रेरणास्रोत व्यक्तित्वों के जीवन, संघर्ष, सेवा और समर्पण का उल्लेख है, जिन्होंने अपने कर्मों से समाज को नई दिशा और नई चेतना प्रदान की है। उनके जीवन से प्रत्येक व्यक्ति प्रेरणा प्राप्त करेगा और सेवा, सदाचार, संयम तथा आध्यात्मिक जीवन की ओर अग्रसर होगा।

मेरी यह प्रार्थना है कि प्रभुकृपा सभी पाठकों पर सदैव बनी रहे। यह ग्रंथ प्रत्येक परिवार में प्रेम, सद्भाव, संस्कार, भक्ति और मानव सेवा की भावना को जागृत करे तथा समाज में नैतिक चेतना और आध्यात्मिक जागरण का एक सशक्त माध्यम बने।

मैं इस पुण्य कार्य से जुड़े सभी विद्वानों, लेखकों, संपादकों, सहयोगियों एवं आयोजकों को हृदय से साधुवाद देती हूँ कि उन्होंने मानवता के उत्थान हेतु एक ऐसा प्रेरणादायी ग्रंथ समाज को समर्पित किया है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

'मानवता के प्रहरी' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि सेवा, संस्कार, समर्पण और सनातन जीवन मूल्यों का दिव्य संदेश है। मैं इस पावन प्रकाशन पर अपनी हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान करती हूँ। प्रभु श्रीकृष्ण की अनंत कृपा से यह ग्रंथ जन-जन तक पहुँचे, मानवता के कल्याण का माध्यम बने तथा समस्त विश्व में शांति, प्रेम, सद्भाव और धर्म की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित करता रहे।

- परम पूज्या माँ चैतन्य मीरा जी

श्रीमद्भागवत कथाव्यास



श्री सुनील दुबे
अध्यक्ष
देवनागरी उत्थान फाउंडेशन

शुभकामना संदेश

मानव सभ्यता का वास्तविक वैभव उसके भौतिक विकास में नहीं, बल्कि उसके भीतर विद्यमान करुणा, संवेदना, न्यायप्रियता और सेवा-भाव में निहित होता है। इतिहास साक्षी है कि समाज को नई दिशा देने वाले वे लोग होते हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। ऐसे प्रेरणास्पद व्यक्तित्वों के संघर्ष, सेवा और समर्पण को एक मंच पर संजोने का जो सार्थक प्रयास 'मानवता के प्रहरी' के माध्यम से किया गया है, वह निश्चय ही अत्यंत प्रशंसनीय, प्रेरणादायी और युगोपयोगी है।

एक शिक्षक होने के नाते मेरा दृढ़ विश्वास है कि पुस्तकों का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं होता, बल्कि समाज के चरित्र का निर्माण करना भी होता है। जब कोई पुस्तक समाज में निस्वार्थ सेवा, मानवाधिकारों के सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों और राष्ट्र निर्माण की भावना को सशक्त करती है, तब वह एक सामान्य प्रकाशन नहीं रहती, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन जाती है। मुझे विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' ऐसी ही एक प्रेरक कृति सिद्ध होगी।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा वर्षों से मानवाधिकार जागरूकता, सामाजिक न्याय, शिक्षा, सेवा, महिला सशक्तिकरण तथा वंचित वर्गों के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। संस्था ने यह सिद्ध किया है कि यदि सेवा का संकल्प निष्काम हो और उद्देश्य लोककल्याण हो, तो सीमित संसाधनों के बावजूद समाज में व्यापक परिवर्तन संभव है। यह पुस्तक भी उसी सतत जनसेवा यात्रा का एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी दस्तावेज है।

देवनागरी उत्थान फाउंडेशन का उद्देश्य भी भारतीय भाषाओं, संस्कृति, शिक्षा और मानवीय मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन है। मुझे प्रसन्नता है कि यह पुस्तक सेवा, संस्कार और सामाजिक चेतना के ऐसे आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करेगी। यह केवल सम्मानित व्यक्तित्वों का परिचय नहीं देगी, बल्कि पाठकों को यह भी प्रेरित करेगी कि वे अपने जीवन में मानवता, सहयोग, नैतिकता और राष्ट्रहित को सर्वोच्च स्थान दें।

मैं 'मानवता के प्रहरी' के प्रकाशन पर संपादकीय मंडल, सभी सहयोगियों तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि यह पुस्तक समाज में सेवा, सद्भाव, संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों की नई चेतना का संचार करे तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमूल्य स्रोत बने।



- डा.केशव शरण
आचार्य - नेपालसंस्कृतविश्वविद्यालय
काठमाण्डू नेपाल
सलाहकार - इण्टरनेशनल फेडरेशन आफ एस्ट्रोलॉजी एण्ड स्पिरिचुअल साइन्स
नेपाल,भारत एवं श्रीलंका

शुभकामना संदेश

अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा नई दिल्ली मे अद्भुत सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है , यह आह्लाद पूर्ण समाचार जानकर अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हुई । इस अवसर पर 'मानवता के प्रहरी' इस लोकहितकारी एवं प्रेरणादायी कृति के विमोचन के लिए मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूँ।

मानवता की सेवा ही सच्चे धर्म का स्वरूप है। जो साहित्य, समाज में संवेदना, सेवा, करुणा, समानता, न्याय तथा नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करे, वही कालजयी बनता है। निः सन्देह 'मानवता के प्रहरी' ऐसी ही प्रेरक कृति है, जो मानवाधिकारों की रक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रसेवा तथा लोकमंगल के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का सार्थक माध्यम बनेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो भारत द्वारा विगत वर्षों से मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक न्याय, शिक्षा के प्रसार, वंचित एवं पीड़ित वर्गों के उत्थान, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, जनजागरण तथा सेवा के विविध क्षेत्रों में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्य वास्तव में अनुकरणीय हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन उन सतत सेवा-प्रयासों का साहित्यिक एवं प्रेरणादायी अभिलेख सिद्ध होगा, जिससे वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ियाँ भी लोकसेवा के उच्च आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करेंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति मानवता, सह-अस्तित्व, सामाजिक समरसता, संवैधानिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय एकात्मता के संदेश को सुदृढ़ करेगी। यह समाज के प्रत्येक वर्ग में सेवा, सहयोग, सद्भाव एवं उत्तरदायित्व की भावना जागृत कर लोककल्याण के नवीन आयाम स्थापित करेगी। साथ ही यह कृति मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सजग बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस पावन अवसर पर मैं इस प्रेरणादायी कृति के सम्पादक मण्डल, इसके विमोचन समारोह के आयोजकों, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो भारत के समस्त पदाधिकारियों एवं सहयोगियों को पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ। प्रभु से प्रार्थना है कि यह कृति व्यापक जनमानस तक पहुँचे, समाज में सेवा, करुणा एवं मानवता के संस्कारों का विस्तार करे तथा लोकमंगल के पथ पर निरन्तर प्रकाश-स्तम्भ के रूप में अपना योगदान देती रहे।

इसी मंगलकामना के साथ पुनः हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

मानवता की राह पर, बढ़े सदा यह ज्ञान।
'मानवता - प्रहरी' बने, जन-जन का सम्मान॥



श्री जितेंद्र पाराशर
जिला जज
शाजापुर (मध्य प्रदेश)

शुभकामना संदेश

'मानवता के प्रहरी' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि न्याय, मानवाधिकार, सामाजिक उत्तरदायित्व, संवैधानिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को जन-जन तक पहुँचाने वाला एक सशक्त माध्यम है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन तभी संभव है, जब सेवा, करुणा, समानता और जनहित की भावना को निरंतर प्रोत्साहित किया जाए।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) द्वारा मानवाधिकारों के संरक्षण, सामाजिक समरसता, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, स्वैच्छिक रक्तदान, शिक्षा के प्रसार तथा वंचित एवं जरूरतमंद लोगों के कल्याण हेतु किए जा रहे विविध जनहितकारी कार्य अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

विशेष रूप से एसिड अटैक पीड़ित महिलाओं के सम्मानपूर्ण पुनर्वास, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक पुनर्स्थापन, आर्थिक रूप से कमजोर बालक एवं बालिकाओं को स्टेशनरी, पुस्तकें, कॉपियाँ, विद्यालयी बैग एवं अन्य शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराकर शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने का अभियान, तथा वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता जागरूकता और पर्यावरण संतुलन के लिए जनभागीदारी को बढ़ावा देने जैसे पर्यावरणीय प्रयास समाज में सकारात्मक परिवर्तन के प्रेरक उदाहरण हैं। ऐसे कार्य मानव सेवा के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के निर्माण का भी महत्वपूर्ण आधार हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'मानवता के प्रहरी' अपने निष्पक्ष, रचनात्मक एवं जनहितकारी प्रकाशन के माध्यम से मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण संरक्षण तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन का संदेश निरंतर जन-जन तक पहुँचाता रहेगा। यह पत्रिका समाज को सेवा, सद्भाव, न्याय और राष्ट्रनिर्माण के प्रति प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मैं 'मानवता के प्रहरी' के संपादकीय परिवार तथा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण ब्यूरो (भारत) के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को उनके समर्पित सेवा-कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह सेवा-अभियान निरंतर प्रगति करता रहे और मानवता, न्याय, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण तथा जनकल्याण के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करे।

'मानव सेवा, न्याय, शिक्षा और प्रकृति संरक्षण–इन्हीं मूल्यों से सशक्त एवं संवेदनशील समाज का निर्माण संभव है।'

'मानवता के प्रहरी' के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत सफलता के लिए मेरी ओर से हार्दिक मंगलकामनाएँ।



Mr. Ashrith Kumar Siddi
Commissioner
Siddipet Municipal Council

Message of Greetings

A society truly progresses when its people believe in helping one another, respecting each other, and standing together for good causes. The greatest strength of any nation lies in its aware citizens and in institutions that work with a genuine spirit of public service. Such efforts build trust among people and lead society toward a brighter future.

The publication "Guardians of Humanity" is a commendable initiative. It is not merely a commemorative volume; it is a reflection of the dedication and selfless service of individuals who have devoted themselves to the welfare of society and the nation. Providing a platform to recognize their inspiring work is a meaningful contribution that will encourage young people to serve society with commitment and compassion.

I am pleased to know that the International Human Rights Protection Bureau (India) has been continuously working for many years in the fields of humanitarian service, social awareness, education, environmental protection, women's dignity, and support for the underprivileged. Its commitment to promoting cooperation, respect, and equal opportunities for every section of society is truly praiseworthy.

In today's world, it is equally important to understand our responsibilities as it is to know our rights. If every individual becomes more sensitive toward others and contributes even a small part to the betterment of society, many social challenges can be overcome. Every meaningful change begins with small acts of kindness and responsibility.

I sincerely believe that "Guardians of Humanity" will continue to unite people, promote positive values, and strengthen the spirit of service in the years to come. May this publication inspire countless individuals and encourage greater participation in activities that contribute to public welfare and human dignity.

I extend my heartfelt best wishes to the editorial team, organizers, and everyone associated with this excellent publication. May this noble initiative continue to grow and spread the message of humanity, compassion, and selfless service to every corner of society.